अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि

अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान का अर्थ किसी नवीन तथ्यों की खोज करना है। वास्तव मे अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञान किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जाँच करना निरीक्षण करना योजनाबद्ध अध्ययन व्यापक परीक्षण और तत्परतायुक्त उद्देश्य, सामान्यीकरण की प्रक्रिया है।

शोध प्रविधी

किसी भी शोध कार्य मे यह संभव नहीं हो जाना कि सभी लक्ष्यगत समाष्टि को अध्ययन मे शामिल किया गया जाय। अतः समाष्टि की समस्त ईकाई मे से अध्ययन हेतु कुछ इकाईयो का एक निश्चित विधि द्वारा चुन लिया जाना है। इन संकलित इकाईयों के समुह को न्यादर्श कहते है।

3.2. न्यादर्श का चयन

जब किसी जनसंख्या (इकाई या मनुष्यों का समूह) मे किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञान करने के लिए उसकी कुछ इकाईयों को चुन लिया जाता है। इसे चुनने की क्रिया को न्यादर्श कहते है तथा चुनी हुई इकाईयो के समूह के न्यादर्श चयन कहते है। न्यादर्श जनसंख्याा का एक भाग है जो दिये गये उद्देश्य के लिए महत्वपूर्ण जाति या प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए न्यादर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाती कि वैद्य होता है।

न्यादर्श के चयन हेतु शोधकर्ता द्वारा नवोदय विद्यालय की कक्षा 6 वीं की छात्राओं की सूची प्राप्त की गई। इनमे से चयनित छात्राओं का अध्ययन कक्षा 6 वीं की 33 बालिकाओं का चयन यादृच्छिक रुप से न्यादर्श विधि से लॉटरी पद्धति द्वारा किया गया।

इस प्रकार न्यादर्श मे शासकीय जवाहर नवोदय विद्यालय की 33 बालिकाओं का चयन किया गया।

3.3. शोध के चर

प्रस्तुत शोध हेतु मुख्यतः दो चरो सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को चुना है क्योकि यह शोध अनेकों चरो से मिलकर बना है, परन्तु विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिये क्या सामाजिक समायोजन आवश्यक होता है या नहीं यह जानना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

शोध मे मुख्य रूप से दो प्रकार के चर होते है

स्वतंत्र चर – सामाजिक समायोजन

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

3.4 लघुशोध संबंधित उपकरण का विवरण

किसी भी शोधकार्य में उपकरणों का बहुत महत्व होता है। क्योकि इन उपकरणों का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए, जिससे परिणाम की विश्वसनीयता पर संदेह न किया जा सकें।

प्रस्तुत अध्ययन में जवाहर नवोदय विद्यालय की कक्षा 6वी की बालीकाओं के सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने हेतु निम्नांकित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया।

प्रमाणित उपकरण

1. General classroom advisement Test (1996) G cat by A.K. Singh & A sen Gupta (Class vill).
2. Bell's Adjustment Inventory (BAI) (1994) By R.K. Ojha (Hindi & English) for High School to post graduate level)

3.5 उपकरणों का प्रशासन

अनुसंधानकर्ती को अपने शोध संबंधी जानकारी हासिल करने के लिए 10 दिन का समय लगा। तारीख 28 जनवरी से 8 फरवरी 2015 तक प्रदत्तों का संकलन किया गया।

इसके लिए कक्षा 6वीं के जवाहर नवोदय विद्यालय का चयन किया गया। विद्यालय के प्राचार्य से संपर्क करके उनसे प्रदत्तों के संकलन की विधिवत अनुमति प्राप्त की।

विद्यार्थियों को शोध उपकरण संबंधित निर्देशन निम्नांकित रूप से दिये गये–

- इस परीक्षण का निर्माण केवल शोध हेतु किया जायेगा।
- इसका उद्देश्य आपका मूल्यांकन नहीं है।
- प्रदत्त की जानकारी गोपनीय रखी जायेगी।
- प्रश्नावली में निर्धारित जगह पर नाम, विद्यालय का नाम, लिंग, क्षेत्र सावधानी पूर्वक ?रने को कहा गया।

3.5.1 प्रदत्तों का संकलन

लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता ने शोध से संबंधित आकड़ों का संकलन करने के लिये भोपाल संभाग के शासकीय व अशासकीय विद्यालय को शामिल किया गया है।

3.6 प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

संख्यकीय मापन शोध का मुख्य उपकरण है। अध्ययनकर्ती प्रदत्तों का कुशलता पूर्वक विश्लेषण करने हेतु सांख्यकीय विधियों का प्रयोग करती है जो विश्लेषण की प्रक्रिया का आधार होती है।

शोध अभिकल्प

- शोधकर्ता द्वारा किया गया शोध अध्ययन सह संबंधनात्मक अध्ययन है।

शिक्षा का लाभ

- जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधान कर्ता द्वारा किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता है।
- वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।
- ज्ञान के क्षेत्र मे विस्तार के लिये यह आवश्यकता है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि वर्तमान सीमा कहा तक है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- समस्या_से संबंधित साहित्य के पुनरालोवन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।